आनंदमठ

● बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय

गाड़ी से कूदकर, एक सिपाही का हथियार छीनकर, महेंद्र ने लड़ाई में साथ देना चाहा था, लेकिन तुरंत उन्हें लगा कि ये सब लुटेरे हैं. धन लूटने के लिए ही इन्होंने सिपाहियों पर हमला किया है सो वे अलग जा खड़े हुए. क्योंकि लुटेरों की मदद करने से उनके दुराचार का भागी होना पड़ेगा. हाथ की तलवार फेंक महेंद्र धीरे-धीरे वहां से जाने लगे कि भवानंद उनके पास आकर खड़े हुए. महेंद्र ने पूछा– आप कौन हैं?

भवानंद ने कहा– यह जानने से तुम्हें क्या मतलब?

महेंद्र – मतलब है. आज मैं आपसे बहुत उपकृत हुआ हूं.

भवानंद – लेकिन इसका तुम्हें बोध है, ऐसा तो नहीं लगा. हाथ में हथियार और अलग खड़े रहे- जमींदार का लड़का, दूध-घी का श्राद्ध करने में मज़बूत और काम के वक्त फिस!

भवानंद की बात समाप्त होते न होते महेंद्र ने घृणा के साथ कहा– 'यह तो बुरा काम है, डकैती है.'

भवानंद ने कहा– डकैती ही सही. हमने तुम्हारा कुछ उपकार किया है और कुछ और उपकार करने की इच्छा है.

महेंद्र – आपने हमारा कुछ उपकार ज़रूरी किया है, लेकिन अब क्या उपकार करेंगे? और फिर डकैत का उपकार लेने से न लेना ही अच्छा है.

भवानंद – खैर, उपकार लेने न लेने की तुम्हारी इच्छा. चाहो तो मेरे साथ चलो. तुम्हारी स्त्री-बच्ची से मिला दूं.

महेंद्र पलटकर खड़े हुए – सो कैसे?

भवानंद ने कोई जवाब नहीं दिया, आगे बढ़े. लाचार महेंद्र पीछे हो लिये. सोचने लगे, ये किस तरह के लुटेरे हैं!

चांदनी रात में दोनों चुपचाप प्रांतर पार करने लगे. महेंद्र चुप थे. शोक से कातर, कुछ गर्वित, कुछ कुतूहल भरे.

सहसा भवानंद ने दूसरा ही रूप धारण किया. वह स्थिरधीर संन्यासी न रहे, युद्धकुशल, सेनापति की गर्दन उतारने वाले वीर न रहे. अभी-अभी गर्व से महेंद्र को जो तिरस्कार कर रहे थे, सो न रहे. ज्योत्स्नामयी शांतिभरी धरती के वन-पर्वत-नद-नदोमयी शोभा देखकर उनके हृदय में मानो एक विशेष स्फूर्ति हुई– समुद्र मानो

चांद के उगने से हंसा. संन्यासी हंसमुख और प्रियभाषी बन गये. बोलने के लिए बड़े उत्सुक. भवानंद ने बात करने की बहुतेरी कोशिश की, लेकिन महेंद्र न बोले. लाचार भवानंद ने गीत गाना शुरू कर दिया–

वंदे मातरम्
सुजलां सुफलां
मलयज शीतलां
शस्य श्यामलां
मातरम्।

गीत सुनकर महेंद्र को अचम्भा हुआ, कुछ समझ नहीं सके. सुजला सुफला, मलयज शीतला, शस्य श्यामला माता कौन? पूछा, माता कौन. और कोई उत्तर न देकर भवानंद गाने लगे–

शुभ्र-ज्योत्स्ना-पुलकित-यामिनीम्
फुल्लकुसुमित-द्रुमदल शोभिनीम्
सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीम्
सुखदां वरदां मातरम्।

महेंद्र ने कहा – यह छवि तो देश की है, यह मां कहां है?

भवानंद ने कहा – हम और मां को नहीं मानते- जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी. हम मानते हैं जन्मभूमि ही जननी है. हमें मां नहीं, बाप नहीं, भाई नहीं, बंधु नहीं, स्त्री-पुत्र नहीं, घर-द्वार नहीं, हमारे लिए बस वही सुजला, सुफला मलयजशीतला- शस्यश्यामला.

महेंद्र ने अब समझा और कहा – तो फिर गाइए. भवानंद फिर गाने लगे-

वंदे मातरम्
सुजलां सुफलां
मलयज शीतलां
शस्य श्यामलां
मातरम्।
शुभ्र-ज्योत्सना-पुलकित-यामिनीम्
फुल्लकुसुमित-द्रुमदल शोभिनीम्
सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीम्
सुखदां वरदां मातरम्।
कोटिकोटि कंठ कलकल निनाद कराले,
कोटिकोटि भुजैर्धुतखर कर वाले
अबला केनो मां एतो बले।
बहुबलधारिणीं
नमामि तारिणीं
रिपुदलवारिणीं
मातरम्।
तुमि विद्या तुमि धर्म
तुमि हृदि तुमि मर्म
त्वंहि प्राणा: शरीरे।
बाहुते तुमि मां शक्ति
हृदये तुमि मां भक्ति
तो मारह प्रतिमा गड़ि
मंदिरे मंदिरे।
त्वंहि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी
कमला कमल - दल विहारिणी
वाणी विद्यादायिनी
नमामि त्वां,
नमामि कमलाम्
अमलां अतुलाम्

सुजलां सुफलां

मातरम्।

वंदे मातरम्।

महेंद्र ने देखा, लुटेरा गाते-गाते रोने लगा. अचरज से पूछा – तुम लोग हो कौन?

भवानंद बोले – हम संतान हैं.

महेंद्र – संतान? किसकी संतान?

भवानंद – मां की संतान.

महेंद्र - माना, मगर, संतान क्या चोरी, डकैती करके मां की पूजा करते हैं? यह कैसी मातृभक्ति है?

भवानंद – हम चोरी डकैती नहीं करते.

महेंद्र – अभी-अभी तो बैलगाड़ी लूटी.

भवानंद – लूट? किसके रुपए लूटे?

महेंद्र - क्यों, राजा के.

भवानंद – राजा के? इन रुपयों को लेने का उसका क्या अधिकार है?

महेंद्र – राजा का अंश.

भवानंद – जो प्रजा का पालन नहीं करता, वह राजा कैसा?

महेंद्र – मैं देखता हूं, तुम सब जाने कब तोप से उड़ा दिए जाओगे सिपाहियों से.

भवानंद – बहुत सारे सिपाहियों को देखा है – आज भी देखा.

महेंद्र – अभी ठीक से नहीं देखा है, कभी देखोगे.

भवानंद – देखा ही सही, मरना तो एक से दो बार नहीं है.

महेंद्र – मगर जानकर मरने से क्या लाभ?

भवानंद – महेंद्रसिंह, मैं समझता था कि तुम आदमी हो, मगर अब जाना कि जो सब हैं, वही तुम भी हो. सिर्फ दूध-घी के दुश्मन. देखो सांप कलेजे के बल माटी पर रेंगता है. उससे नीच जीव मेरी समझ में दूसरा नहीं. मगर उस पर भी पांव पड़ जाय तो वह फन उठाता है. तुम्हारा धीरज क्या किसी बात से नहीं टूटता? सोचो और देखो, जितने भी इलाके हैं, मगध, मिथिला, काशी, दिल्ली, कांची, काश्मीर, कहां की ऐसी दुर्गत है; कहां लोग भूख के मारे घास खाते हैं? कांटा चबाते हैं? दीमक की माटी खाते हैं? कहां लोग गीदड़, कुत्ता खाते हैं, लाश उठाकर खाते हैं? कौन-सा ऐसा देश है, जहां लोगों के संदूक में पैसा है, मगर चैन नहीं, सिंहासन पर शालिग्राम को बिठाकर चैन नहीं, घर में बहू-बेटी के पेट में बच्चा रखकर चैन नहीं? पेट चीरकर बच्चे को निकालते हैं. कोई भी देश हो, राजा से उसकी रक्षा और हिफाजत का सम्बंध है– मगर हमारा मुसलमान राजा हमारी रक्षा कहां करता है? धर्म गया, जात गयी, मान गया– अब तो जान जाने की नौबत. इन नशेबाजों को हटाये बिना हिंदुत्व की खैर नहीं.

महेंद्र – मगर हटाओगे कैसे?

भवानंद – मारकर.

महेंद्र – अकेले भगा दोगे? एक

थप्पड़ से.

उत्तर में लुटेरे ने गाया–

कोटिकोटि कंठ कलकल निनाद कराले,
कोटिकोटि भुजैर्धृत खरकर वाले
अबला केनो मां एतो बले.

महेंद्र – लेकिन देख रहा हूं तुम अकेले हो.

भवानंद – क्यों, अभी तो तुमने दो सौ हथियारबंदों को देखा.

महेंद्र – वे सबके सब संतान हैं?

भवानंद – हां.

महेंद्र – और कितने हैं?

भवानंद – हज़ारों. धीरे-धीरे और बढ़ेंगे.

महेंद्र – माना, दस-बीस हज़ार. लेकिन उससे मुसलमानों को गद्दी से उतार सकोगे?

भवानंद – पलासी में अंग्रेज़ों की कितनी फौज थी?

महेंद्र – कहां अंग्रेज़ और कहां बंगाली! बराबरी?

भवानंद – क्यों नहीं? देह की कूबत से क्या होता है– बदन में ज़्यादा ताकत होने से गोला क्या ज़्यादा छूटता है?

महेंद्र – फिर अंग्रेज़ और मुसलमान में इतना फर्क क्यों?

भवानंद – यों समझो कि एक अंग्रेज़ जान जाने पर भी भाग नहीं सकता और मुसलमान को पसीना आया नहीं कि भागा– शरबत खोजता फिरेगा. फिर अंग्रेज़ धुन के पक्के होते हैं. जो ठानते हैं, करते हैं. रुपये के लिए जान गंवाना, वह भी सिपाहियों को तनखा नहीं मिलती. और सबसे बड़ी बात है साहस. तोप का गोला एक ही जगह गिरता है, दस जगह नहीं, लिहाजा एक गोला देखकर दस के भागने की ज़रूरत नहीं. लेकिन एक गोला देखकर मुसलमानों की पूरी जमात भाग जाएगी, जबकि तोपों की भीड़ देखकर कोई एक अंग्रेज़ भी नहीं भागेगा.

महेंद्र – तुम लोगों में यह कमाल है?

भवानंद – नहीं. लेकिन कमाल कोई पेड़ से तो टपकता नहीं. अभ्यास करना पड़ता है.

महेंद्र – तुम लोग अभ्यास करते हो?

भवानंद – बाना नहीं देख रहे हो! संन्यासी का यह बाना अभ्यास के लिए है. लक्ष्य की प्राप्ति हो जाएगी तो हम सब संसारी होंगे. हमें भी आखिर बाल-बच्चे हैं.

महेंद्र – तुम लोग उस माया को जीत सके हो?

भवानंद – संतान का झूठ नहीं बोलना चाहिए. तुमसे झूठी बढ़ाई नहीं करूंगा. माया को जीत कौन सकता है! जो कहता है कि मैंने माया छोड़ दी, या तो उसे माया कभी थी ही नहीं या फिर वह झूठी डींग हांकता है. हम असल में माया नहीं त्यागते, व्रत रखते हैं. तुम संतान बनोगे?

महेंद्र – अपने स्त्री-बच्ची से मिले बिना मैं कुछ नहीं कह सकता.

भवानंद ने कहा, तो चलो, उनसे मिल

लो. दोनों आगे बढ़े. भवानंद 'वंदे मातरम्' गाने लगे. महेंद्र की आवाज़ अच्छी थी. संगीत से प्रेम भी था, थोड़ी बहुत जानकारी भी थी. भवानंद के साथ-साथ गाया तो उनकी आंखों में पानी भर आया. बोले, अगर बीवी-बच्ची को छोड़ना न पड़े तो मुझे यह व्रत ग्रहण कराओ.

जो इस व्रत की दीक्षा लेता है, वह बाल-बच्चों का त्याग करता है. तुम अगर यह व्रत लोगे तो स्त्री-बच्चों से मुलाकात नहीं कर पाओगे.

भवानंद – जो इस व्रत की दीक्षा लेता है, वह बाल-बच्चों का त्याग करता है. तुम अगर यह व्रत लोगे तो स्त्री-बच्चों से मुलाकात नहीं कर पाओगे. उनकी सुरक्षा की व्यवस्था की जाएगी, लेकिन जब तक व्रत की सफलता नहीं होगी, उनका मुंह भी नहीं देख पाओगे.

महेंद्र – फिर तो मैं यह व्रत नहीं लूंगा.

●●●

सवेरा हुआ. जनहीन जंगल, जो अब तक अंधेरा और चुपचाप-सा था, चिड़ियों की चहक से आनंदमय हो उठा. उसी आनंदमय प्रातः में कूजनमुखरित कानन के आनंदमठ में सत्यानंद ब्रह्मचारी हरिन-चर्म के आसन पर बैठ आह्निक कर रहे थे. पास में बैठे थे जीवानंद. ऐसे समय महेंद्रसिंह को साथ लेकर भवानंद वहां पहुंचे. ब्रह्मचारी चुपचाप आह्निक करते रहे. किसी को कुछ कहने का साहस न हुआ. आह्निक समाप्त होने पर जीवानंद और भवानंद ने उन्हें प्रणाम किया और उनके चरणों की धूल लेकर विनीत भाव से बैठ गये. ब्रह्मचारी सत्यानंद इशारे से भवानंद को बाहर ले गये. वहां दोनों में क्या बातें हुईं, पता नहीं. दोनों लौटे. हंसते हुए ब्रह्मचारी ने महेंद्र से कहा, 'बेटे, तुम्हारे दुख से मैं बहुत दुखी हूं. कल रात मात्र भगवान की कृपा से ही मैं तुम्हारी स्त्री-बच्ची को बचा सकने में समर्थ हुआ. इसके बाद उन्होंने घटना का वर्णन करके कहा, चलो, तुम्हें वहां ले चलूं, जहां वे लोग हैं.'

आगे-आगे ब्रह्मचारी और उनके पीछे-पीछे महेंद्र मंदिर के अंदर गये. महेंद्र ने देखा, बड़ा ही विशाल, बहुत ही ऊंचा प्रकोष्ठ. नये सूरज से खिले प्रभात में, जबकि पास का जंगल किरणों की जोत से हीरा जड़ा-सा जगमगा रहा था, उस विशाल कमरे में अंधेरा था. कमरे के अंदर क्या है जाते ही महेंद्र को नज़र नहीं आया. देखते-देखते तब दिखाई पड़ा कि एक बहुत चतुर्भुज मूर्ति है– शंख, चक्र, गदा, पद्म, कौस्तुभशोभित हृदय, सामने सुदर्शन चक्र घूमता हुआ-सा. मधुकैटभ स्वरूप मस्तकहीन दो मूर्तियां, लहू सनी-सी बाहें, खुले बालों, शतदल माल शोभित

लक्ष्मी की मूर्ति बाएं. दाहिने खड़ी सरस्वती-पुस्तक, वीणा, राग-रागिनियों से घिरी. विष्णु के अंक में एक मोहिनी मूर्ति-लक्ष्मी, सरस्वती से अधिक सुंदरी, लक्ष्मी सरस्वती से भी अधिक ऐश्वर्यमयी. गंधर्व, किन्नर, देव, यक्ष, राक्षस उनकी पूजा कर रहे हैं! ब्रह्मचारी बड़े ही घोर और भीत स्वर में महेंद्र से बोले, सब कुछ देख रहे हो?

महेंद्र ने कहा – जी.

ब्रह्मचारी – विष्णु की गोद में क्या है, देखा?

महेंद्र – देखा! कौन हैं वे?

ब्रह्मचारी – मां.

महेंद्र – मां कौन?

ब्रह्मचारी – हम जिनकी संतान हैं. समय पर पहचानोगे. बोलो, वंदे मातरम्. चलो, और दिखाएं.

ब्रह्मचारी महेंद्र को दूसरे कमरे में ले गये. वहां महेंद्र ने सर्वांगसम्पन्ना, सब आभरणों से भूषित जगद्धात्री की एक अपूर्व मूर्ति देखी. पूछा, ये कौन हैं.

ब्रह्मचारी – ये हैं मां – जैसी थी.

महेंद्र – मतलब?

ब्रह्मचारी – इन्होंने कुंजर-केसरी आदि पशुओं को पैरों तले रौंदकर उनके आवासस्थल में अपना पद्मासन स्थापित किया था. सभी आभूषणों से सजी हंसमुख सुंदरी थी. ये हैं बालसूर्य की आभावली, सभी ऐश्वर्यों की स्वामिनी. इन्हें प्रणाम करो.

जगद्धात्री स्वरूप मातृभूमि को महेंद्र ने प्रणाम किया. एक सुरंग दिखा कर ब्रह्मचारी ने कहा, इसमें होकर चलो. वे स्वयं आगे-आगे चले. महेंद्र डरते हुए पीछे हो लिए. ज़मीन के अंदर के एक कमरे में जाने कहां से हल्की-सी रोशनी आ रही थी. उस धीमे प्रकाश में काली मूर्ति दिखाई पड़ी.

ब्रह्मचारी ने कहा – यह देखो, मां अब जो बनी है.

महेंद्र ने डरकर पूछा – काली!

ब्रह्मचारी – काली-अंधकार से भरी, कालिमामयी. सब खा चुकी है, इसलिए नंगी. आज देश में जहां देखो, मसान है. मां ने इसीलिए नरमुंडों की माला पहनी है. अपने ही शिव को पैरों से रौंद रही हैं – हाय मां.

ब्रह्मचारी की आंखों से आंसू की धारा बहने लगी.

महेंद्र ने कहा – मां के हाथ में खेटक-खप्पर क्यों?

ब्रह्मचारी ने कहा – हम संतान हैं. मां के हाथों अभी-अभी तो हथियार दिया है. बोलो, वंदे मातरम्.

वंदे मातरम् कहकर महेंद्र ने काली को प्रणाम किया. ब्रह्मचारी ने कहा – इधर से आओ. और वे दूसरी सुरंग से उतरने लगे. एकाएक उनकी आंखों में सुबह के सूरज की किरणें चमक उठीं. चारों ओर से चिड़िया मीठा-मीठा गा उठीं.

देखा, संगमरमर के एक प्रशस्त कमरे में सोने की दशभुजा मूर्ति किरणों से दमकती हुई हंस रही है. ब्रह्मचारी ने प्रणाम करके कहा – यह मूर्ति देखो मां की, जो कि होंगी मां. दसों दिशाओं में फैली हुई दस भुजाएं– भुजाओं में भिन्न-भिन्न स्वरूप में शोभित शक्तियां; पैरों तले वीर केसरी शत्रुनिपात में लीन.

दिग्‌भुजा – कहते-कहते ब्रह्मचारी सत्यानंद रोने लगे. दिग्‌भुजा नाना अस्त्रधारिणी, शत्रुविमर्दिनी – सिंह की पीठ पर सवार, दाएं भाग्यरूपिणी लक्ष्मी, बाएं ज्ञान-विज्ञान देने वाली सरस्वती-साथ में शक्तिस्वरूप कार्तिकेय-कार्यसिद्धि रूप गणेश-आओ, हम मां को प्रणाम करें.

दोनों हाथ जोड़कर एक साथ बोल उठे–

सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ-साधिके
शरण्ये त्र्यंबके गौरी नारायणी नमोस्तुते।

दोनों ने भक्तिपूर्वक प्रणाम किया. महेंद्र ने गदगद स्वर से पूछा – मां की इस मूर्ति के दर्शन कब होंगे?

ब्रह्मचारी बोले – मां की सभी संतानें जब उन्हें मां कहकर पुकारेंगी, मां उसी दिन प्रसन्न होंगी.

सहसा महेंद्र पूछ बैठे – मेरी स्त्री-बच्ची कहां हैं?

ब्रह्मचारी – उनसे मिलाता हूं चलो.

महेंद्र – बस, एक बार उनसे मिलकर उन्हें विदा करूंगा.

ब्रह्मचारी – क्यों, विदा क्यों कर दोगे?

महेंद्र – मैं इस महामंत्र की दीक्षा लूंगा.

ब्रह्मचारी – ठीक है. उन्हें भेजोगे कहां?

महेंद्र ने जरा देर सोचकर कहा – मेरे घर पर कोई नहीं है और उसके सिवाय दूसरी कोई जगह भी नहीं. इस महामारी के समय और जगह भी कहां मिलेगी?

ब्रह्मचारी – तुम जिस राह होकर यहां आये, उसी राह से बाहर चले जाओ. तुम्हारी स्त्री और बच्ची मंदिर के द्वार पर मिल जायेंगी. वहीं पर खाने का सामान भी हैं. कल्याणी ने कुछ खाया नहीं है. उसे खिलाकर तुम्हारा जो जी चाहे करना. अभी अब हम लोगों में से किसी की भेंट न होगी. अगर तुम्हारी यही इच्छा रही तो मैं समय पर आ जाऊंगा.

ब्रह्मचारी जाने किस राह से गायब हो गये. महेंद्र जिस राह से आए थे, उसी से निकले. जाकर देखा, बाहर नाट्यमंदिर में उनकी स्त्री और बच्ची बैठी हैं. ❑

तथ्य

तथ्य तथ्य होते हैं, आपकी पसंद-नापसंद से बदलते नहीं.

– जवाहरलाल नेहरू